पाठ-2

चार मित्र

पंचतंत्र की कहानियाँ बहुत पुरानी हैं। ये मूलत: संस्कृत में लिखी गई थीं। किंवदंती है कि एक राजा के तीन नासमझ बेटे थे। राजा ने एक विद्वान विष्णुशर्मा को उन्हें शिक्षा देने के लिए नियुक्त किया। विष्णुशर्मा ने उन्हें जीवन में प्रसन्न रहने और सफलता प्राप्त करने की कला सिखाई। पंचतंत्र में पशु-पक्षियों की कहानियों के माध्यम से नीति की शिक्षा दी गई है।

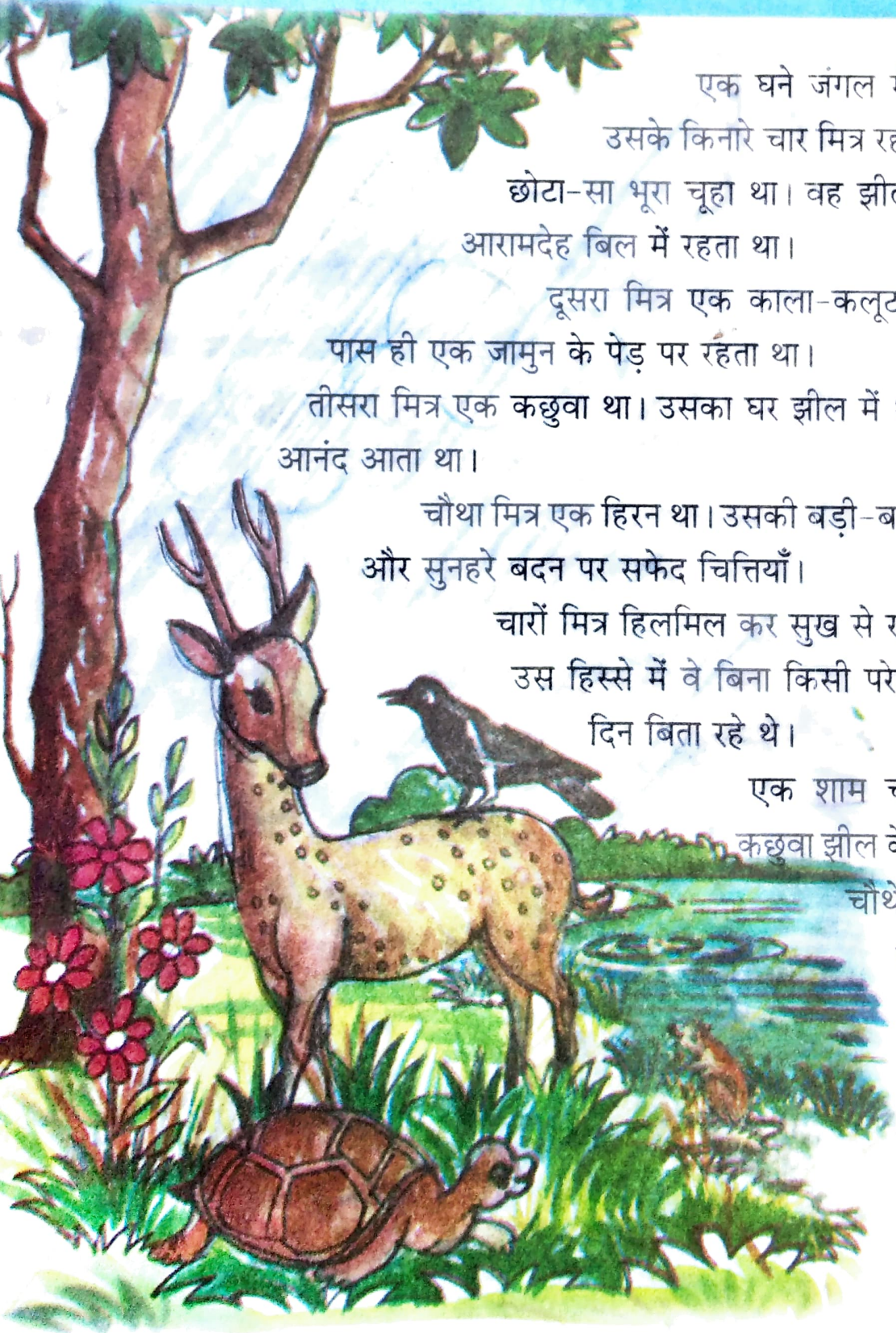

एक घने जंगल में एक झील थी। उसके किनारे चार मित्र रहते थे। पहला एक छोटा-सा भूरा चूहा था। वह झील के किनारे एक आरामदेह बिल में रहता था।

दूसरा मित्र एक काला-कलूटा कौवा था। वह पास ही एक जामुन के पेड़ पर रहता था।

तीसरा मित्र एक कछुवा था। उसका घर झील में था और वहीं उसे आनंद आता था।

चौथा मित्र एक हिरन था। उसकी बड़ी-बड़ी सुंदर आँखें थीं और सुनहरे बदन पर सफेद चित्तियाँ।

चारों मित्र हिलमिल कर सुख से रहते थे। जंगल के उस हिस्से में वे बिना किसी परेशानी के शांति से दिन बिता रहे थे।

एक शाम चूहा, कौवा और कछुवा झील के किनारे बैठे-बैठे चौथे मित्र हिरन का इंतजार कर रहे थे। बैठे-बैठे घंटों बीत गए पर हिरन नहीं आया।

कौवा हिरन की खोज में उड़ चला। उड़ते समय हिरन को पुकारता भी रहा, ''हिरन, प्यारे हिरन, तुम कहाँ हो?''

कुछ समय बाद उसे अपनी पुकार के जवाब में एक हल्की आवाज सुनाई दी। वह हिरन की आवाज थी।

''बचाओ, मुझे बचाओ'', हिरन कह रहा था, ''मैं यहाँ हूँ, यहाँ।''

कौवा नीचे आया तो देखा कि हिरन एक जाल में फँसा है।

''ओह, तुम तो जाल में फँसे हो!'' कौवे ने दु:खी होकर कहा, ''अब क्या किया जाए? अच्छा ठहरो, मैं तुम्हारी मदद के लिए दोस्तों के पास जाता हूँ।''

अपने दोस्त को देख हिरन की आँखों में आँसू भर आए, उसने कहा, ''भाई, जो ठीक समझो करो, मगर जो कुछ करना हो जल्द करो।''

कौवा फुर्ती से उड़ता हुआ झील के पास लौट आया। उसे देखते ही चूहा और कछुवा दोनों एक साथ बोलने लगे–

''क्या हमारा मित्र मिल गया?''

''हाँ दोस्तो, हाँ'', कौवे ने कहा, ''मिल तो गया लेकिन इस समय वह भारी खतरे में पड़ा हुआ है।''

कौवे ने हिरन के जाल में फँसे होने की सारी कहानी अपने मित्रों को कह सुनाई।

इस पर कछुवे ने चटपट एक उपाय सोच निकाला। उसने कहा, ''चिंता की कोई बात नहीं। चूहा जाल काटकर हिरन को आजाद कर सकता है।''

''हाँ, क्यों नहीं?'' चूहे ने कहा, ''लेकिन मैं उसके पास जाऊँगा कैसे?''

''यह भी कोई बात है?'' कौवे ने कहा, ''मैं तुम्हें

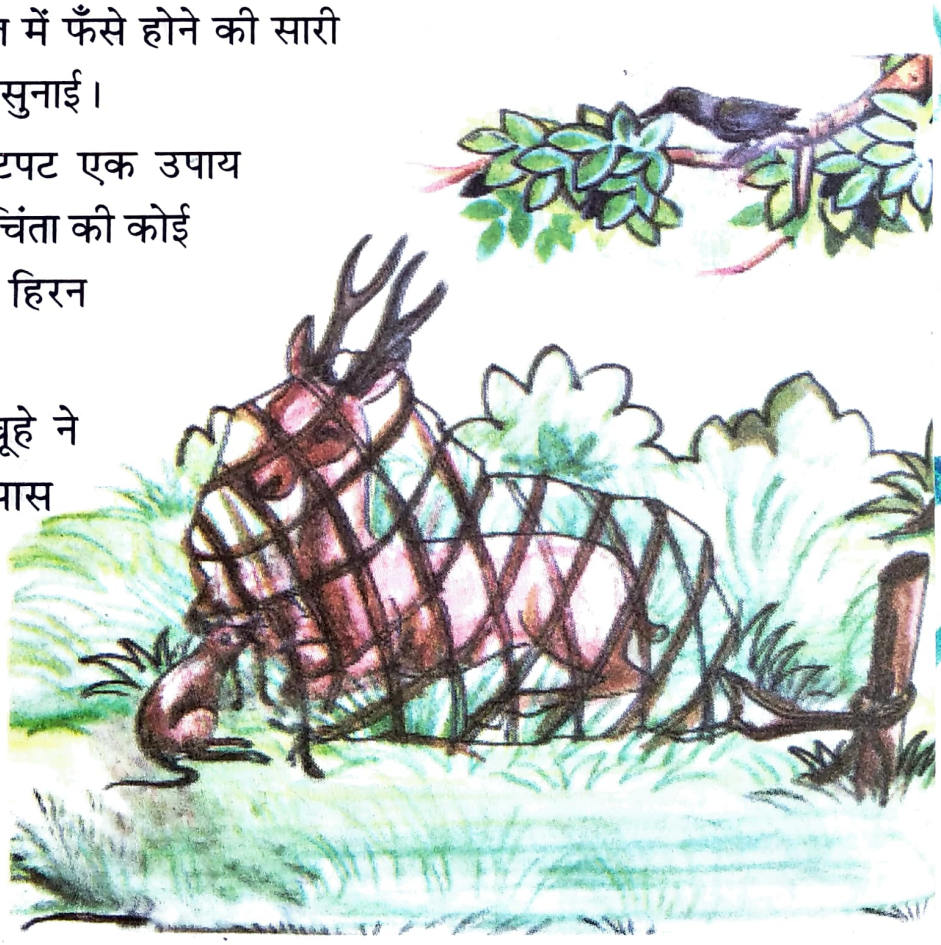

अपनी पीठ पर बैठाकर ले जाऊँगा।''

''तो आओ चलें'', चूहे ने कहा और उचक कर कौवे की पीठ पर बैठ गया।

चूहे को लेकर कौवा उड़ा और थोड़ी ही देर में हिरन के पास जा पहुँचा। हिरन के पास पहुँचते ही चूहा फौरन कौवे की पीठ से उतरा और अपने पैने दाँतों से जाल काटने लगा। उसने जरा ही देर में हिरन को आजाद कर दिया। हिरन उठ खड़ा हुआ। उसी समय धीरे-धीरे रेंगता हुआ उनका चौथा साथी कछुवा भी वहीं आ पहुँचा।

सब हिरन के बच निकलने की चर्चा करने लगे। अचानक किसी के आने का खटका सुनकर चारों चुप हो गए। उन्होंने देखा सामने से बहेलिया चला आ रहा है।

बहेलिये पर नजर पड़ते ही कौवा उड़कर एक ऊँचे पेड़ की डाल पर जा बैठा, चूहा एक बिल में जा छिपा और हिरन चौकड़ी भरता हुआ पलभर में गायब हो गया।

लेकिन कछुवा बेचारा क्या करता? वह जैसे-तैसे एक झाड़ी की ओर रेंगने लगा।

बहेलिये ने पास आकर देखा, तो जाल खाली देख भौंचक रह गया।

''अरे! यह क्या?'' उसने कहा, ''फँसा-फँसाया हिरन भाग निकला!''

वह चकित होकर इधर-उधर देखने लगा। अचानक उसकी निगाह झाड़ी की ओर रेंगते हुए कछुवे पर पड़ी।

उसने कहा, ''यहाँ तो कछुवेराम दिखायी दे रहे हैं। चलो आज इन्हीं का भोग लगाया जाएगा।''

उसने लपक कर कछुवे को पकड़ा और एक थैले में बंद कर घर की ओर चल दिया।

पेड़ पर बैठा हुआ कौवा इस सारी घटना को देख रहा था।

''ओ चूहे भाई! ओ हिरन भाई'', उसने अपने दोस्तों को पुकार कर कहा, ''जल्दी आओ, जल्दी। हमारा मित्र कछुवा भारी मुसीबत में फँस गया है।''

चूहा और हिरन तुरंत भागे-भागे कौवे के पास आए।

कौवे ने कहा, ''कछुवे को आजाद कैसे कराया जाए?''

''जो कुछ भी करना हो'', चूहे ने कहा, ''बहेलिये के घर पहुँचने से पहले ही कर डालना चाहिए।''

हिरन ने कहा, ''हमें क्या करना है, यह मैं बताता हूँ। मैं बहेलिये के रास्ते में खड़ा होकर घास चरने का बहाना करूँगा। बहेलिया मुझे देखेगा तो थैला छोड़कर मेरा पीछा करने लगेगा। उसी बीच चूहा थैला काट देगा और कछुवा आजाद हो जाएगा।''

''लेकिन मान लो, कहीं उसने तुम्हें पकड़ लिया तो?'' कौवे ने पूछा।

''अरे नहीं। तुम चिंता न करो। मैं इतना तेज दौड़ूँगा कि उसे नानी याद आ जाएगी।''

हिरन बहेलिये के रास्ते में जाकर आराम से खड़ा हो गया और मजे से घास चरने लगा।

''हिरन!'' उसे देखते ही बहेलिया चिल्लाया, ''कितना मोटा-ताजा हिरन!'' उसने थैला जमीन पर रखा और हिरन को पकड़ने दौड़ा।

उसी समय चूहा फुर्ती से आया और थैला काटने लगा। जरा ही देर में कछुवा आजाद हो गया। वह, भागा और पास ही एक घनी झाड़ी में छिप गया। उधर हिरन ऐसा दौड़ा कि बहेलिया उसकी दुम भी न पकड़ सका। वह खाली हाथ थैले के पास लौट आया।

''हिरन हाथ न आया तो क्या हुआ?'' उसने कहा, ''यह मोटा-ताजा कछुवा तो है ही। आज के खाने को यही काफी है।''

लेकिन जब बहेलिये ने थैला उठाया तो वह खाली निकला। वह इतना चकित हुआ कि उसे अपनी ही आँखों पर यकीन न आया।

''यह क्या?'' वह चीखा, ''कछुवा नदारद! इतना सुस्त जानकर कैसे भागा होगा? लगता है आज मेरी किस्मत ही खराब है।''

कौवा, हिरन, चूहा और कछुवा छिपे-छिपे बहेलिये को देख रहे थे। जब वह खाली थैला लेकर चला गया तो वे सब ठाट से बाहर निकल आए।

इस प्रकार वे चारों मित्र मिलजुल कर एक दूसरे की मदद करते हुए कई वर्षों तक आनंद से दिन बिताते रहे।

(पंचतंत्र की कथा पर आधारित)

अभ्यास-माला

पाठ से

1. पूर्ण वाक्य में उत्तर दो :

(क) चारों मित्र कहाँ रहते थे ?

(ख) कौवा किसकी खोज में उड़ चला ?

(ग) जाल में फँसे हिरन को छुड़ाने का उपाय किसने किस रूप में निकाला ?

(घ) कछुवे को किसने पकड़ा और उसे आजाद किसने किया ?

(ङ) बहेलिए ने अपनी किस्मत को खराब क्यों कहा ?

2. आओ, चित्रों को आवाजों के साथ मिलाएँ :

(क) मिमियाना (ख) चिंघाड़ना (ग) रेंकना (घ) भौंकना

3. किसने-किससे कहा, बताओ :

(क) "बचाओ, मुझे बचाओ।" ....

(ख) "चिंता की कोई बात नहीं।" ....

(ग) "यहाँ तो कछुवेराम दिखाई दे रहे हैं।" ....

(घ) "बहेलिए के घर पहुँचने से
पहले ही कर डालना चाहिए।" ....

पाठ के आस-पास

1. तुम्हारा प्रिय मित्र कौन है ? उसके बारे में पाँच वाक्य लिखो।
2. सच्ची मित्रता की किन्हीं पाँच विशेषताओं का उल्लेख करो।

योग्यता-विस्तार

1. 'पंच' का अर्थ है पाँच और 'तंत्र' का मतलब है आचरण के सिद्धांत- आत्मविश्वास, दृढ़ता, लगन, मैत्री, और ज्ञान-प्राप्ति। 'पंचतंत्र' में पशु-पक्षियों की कहानियों के जरिए नीति की शिक्षा दी जाती है। तुम भी पुस्तकालय अथवा अन्य स्रोत से 'पंचतंत्र' की कहानियों का संग्रह करके पढ़ो और कक्षा में उनकी चर्चा करो।

2. आओ, पशु और पक्षियों के नाम अलग-अलग लिखें :

चूहा, हाथी, कौवा,
बाघ, कछुवा, घोड़ा,
हंस, तोता, हिरन,
मुर्गा, कबूतर, गाय,
कोयल, बगुला

भाषा-अध्ययन

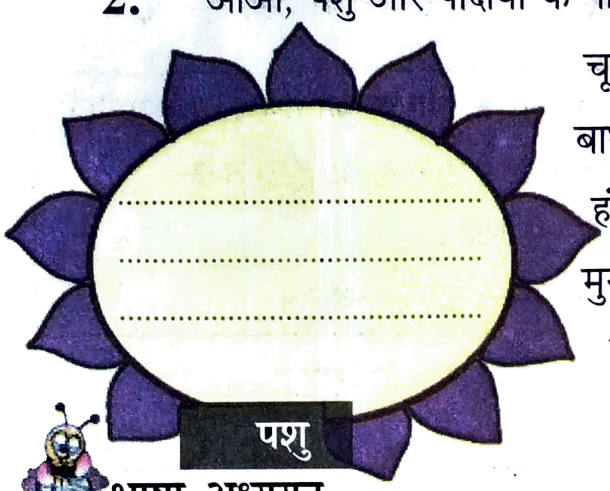

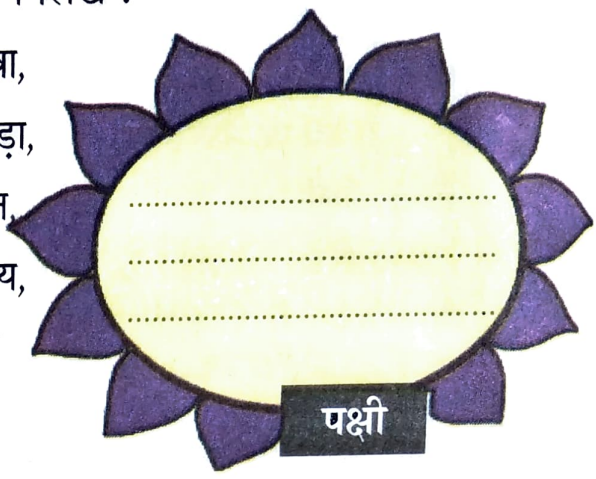

1. ***में, मैं का प्रयोग***

(क) एक घने जंगल में एक झील थी।

(ख) कौवा नीचे आया तो देखा कि हिरन एक जाल में फँसा है।

(ग) मैं तुम्हारी मदद के लिए दोस्तों के पास जाता हूँ।

(घ) मैं यहाँ हूँ, यहाँ।

(ङ) मैं तुम्हें अपनी पीठ पर बैठा कर ले जाऊँगा।

अब में/मैं से रिक्त स्थानों की पूर्ति करो :

(क) एक वर्ष .... बारह महीने होते हैं।

(ख) गाँव .... मेला लगा था।

(ग) .... अपने घर .... हमेशा सफाई रखता हूँ।

2. **र के प्रयोग :**

र के विविध रूप हैं। जैसे – र, रेफ, रकार।

ये भी देखो–

र	ʻ	ˏ	^
रस	चर्चा	मित्र	ट्रेन
रस्सी	वर्षा	प्रकार	ड्रम

> **आओ, जानें :**
> वाक्य में क्रिया के जिस रूप से कार्य के समय का पता चलता है, उसे काल कहते हैं। काल के मुख्यत: तीन भेद हैं –
> (क) **भूत काल** – जब काम के हो जाने का भाव हो।
> (ख) **वर्तमान काल** – जब काम के जारी रहने का भाव हो।
> (ग) **भविष्यत काल** – जब काम आने वाले समय में होने का भाव हो।

आओ, जानें :

जब 'र' किसी व्यंजन के साथ संयुक्त रूप से आता है तब वह कभी संयुक्त व्यंजन से पहले आता है और कभी बाद में आता है। जब 'र' पहले आता है, जैसे, र् + च तो रेफ (ʻ)

होता है, 'र्च', चर्चा। वैसे ही जब 'र' बाद में आता है, जैसे- प् + र, तब रकार होता है- प्र, प्रकार, ड्र, ड्रम।

ड् + र् + अ + म् + अ = ड्रम
प् + र् + अ + ण् + आ + म् + अ = प्रणाम
ट् + र् + ए + न् + अ = ट्रेन
द् + र् + उ + त् + अ = द्रुत

इन वर्णों में 'र' कार का संयोग ध्यान से देखो :

त्+र्+अ=त्र, श्+र्+अ्=श्र, ह्+र्+अ=ह्र

इन्हें भी देखो :

स्+र्+अ=स्र, स्+त्+र्+अ=स्त्र

अब निम्नलिखित शब्दों को निर्देशानुसार अलग-अलग करके लिखो :

ग्रह, दर्पण, क्रम, पर्ण, मद्रास, ड्रम।

र(ॅ)	र(्र , ्)
....	....
....	....
....	....

3. अनुनासिक स्वर और अनुस्वार में अंतर है :

जब किसी स्वर का उच्चारण मुख और नाक दोनों से होता है, तब उसे अनुनासिक स्वर कहा जाता है। ऐसे स्वर के ऊपर चंद्रबिंदु (ँ) लगाया जाता है। जैसे- गँवार, आँख, ईंट, ऊँट, भैंस, गोंद आदि। अनुस्वार नाक से उच्चारित होने वाले वर्ग के पंचम वर्ण (ङ, ञ, ण, न, म) के स्थान पर विकल्प से बिंदु (ं) के रूप में आता है। जैसे-

ङ + ग = गङ्गा/गंगा
ञ + च = चञ्चल/चंचल
ण + ड = खण्ड/खंड
न + त = अन्त/अंत
म + प = सम्पर्क/संपर्क

आओ, पाठ में आए कुछ शब्दों के अर्थ जानें :

शब्द		अर्थ	शब्द		अर्थ
झील	=	बड़ा प्राकृतिक जलाशय, सरोवर	फँसना	=	कैद हो जाना
			फौरन	=	जल्द
काला-कलूटा	=	कुरूप	आजाद	=	मुक्त
सुनहरे	=	सोने के रंगवाले	यकीन	=	विश्वास
इंतजार	=	अपेक्षा	झाड़ी	=	कँटीला पौधा
पुकार	=	जोर से बुलाना	चौकड़ी	=	उछाल, उछल-कूद